ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अहं सूर्य इवाजनि। सामवेद 152
मैं सूर्य के समान औजस्वी, तेजस्वी, नियमित जीवन वाल गुणग्राहक और पवित्र हो जाऊं।
May I with Your grace become, Vigorous Lustrous Punctual, recipient of good qualities & pure like the sun.

वर्ष 37, अंक 22 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 मई, 2014 से रविवार 11 मई, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 10
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ नई दिल्ली के अन्तर्गत झाबुआ (म.प्र.) में संचालित

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया

महाशय जी के आशीर्वाद से प्रथम सत्र आरम्भ

चन्द्रशेखर आजाद के जन्मक्षेत्र आदिवासी जिला झाबुआ एवं निकटवर्ती क्षेत्रों में उच्चकोटि की शिक्षा का केन्द्र होगा यह विद्यालय - महाशय धर्मपाल

यह छात्रावास एवं विद्यालय आधुनिक सुविधाओं से युक्त होंगे

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित एवं महाशय धर्मपाल जी का वरदहस्त प्राप्त महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया, जिला- झाबुआ (म.प्र.) अपने जिले ही नहीं अपितु निकटवर्ती क्षेत्रों में उच्च शिक्षा का एकमात्र केन्द्र है। गत लगभग तीन वर्ष पूर्व आरम्भ हुई इस कार्ययोजना को पूर्णरुपेण मूर्तरुप अभी दिया जाना शेष है। किन्तु महाशय जी इच्छा, भूमिदानदाता परिवार एवं क्षेत्रवासियों की इच्छा का सम्मान करते हुए माता प्रेमलता जी ने इस विद्यालय एवं छात्रावास को इसी सत्र से आरम्भ करने की अनुंशसा की। हालांकि विद्यालय का भवन अभी पूर्ण रूप से नहीं बना था, किन्तु फिर भी विद्यालय संचालन हेतु सभी आवश्यक जरुरतों एवं सुविधाओं को पूर्ण कर लिया गया है, जिससे विद्यालय का सत्र संचालित करने में कोई

(बाएं) नव प्रविष्ट बच्चों के साथ यज्ञ करते महाशय धर्मपाल जी एव अन्य पदाधिकारीगण। (दांए) प्रथम सत्र के शुभारम्भ का स्मृति पट्ट का अनावरण करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, सभा महामन्त्री विनय आर्य एवं श्री राजीव आर्य।

कार्यक्रम की रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 6 एवं 7 पर

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी प्रत्येक आर्य कार्यकर्त्ता के लिए अनुकरणीय

आर्यसमाज रोहिणी में आयोजित कार्यशाला से हुआ 150वें जन्मवर्ष का शुभारम्भः निरन्तर 1 वर्ष तक आयोजित होंगे गुरुदत्त विद्यार्थी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर विभिन्न कार्यक्रम

युवा वर्ग को केन्द्र में रखकर होंगे विशेष आयोजन

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी के 150वें जन्मदिवस पर उनके जीवन, कार्य एवं विचारों से नई पीढ़ी को परिचित करवाने के उद्देश्य से कार्यशाला का आयोजन आर्यसमाज रोहिणी, दिल्ली में 27 अप्रैल को किया गया। इस कार्यशाला में डॉ. विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ, दिल्ली ने अपने उद्बोधन में पण्डित जी के जीवन में उनकी प्रगति, आर्यसमाज के सदस्य बनने की घटना, ऋषि दयानन्द के परलोक गमन को देखकर नास्तिक से आस्तिक बनने की घटना, ऋषि दयानन्द की स्मृति में डी.ए.वी. की स्थापना करने का निर्णय करना, वेद और विज्ञान से प्रेम, आर्यसमाज में वैज्ञानिक उपकरण लेकर जाना, ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का मण्डन करना, वेदों को विज्ञान के अनुकूल सिद्ध करना, ईसाई पादरियों द्वारा स्वामी जी पर किये गए आक्षेपों का निराकरण करना, स्वामी अद्युतानन्द जैसे वेदान्ती सन्यासियों को आर्यसमाज का सदस्य बनाना, स्वगृह पर संस्कृत की पाठशाला को आरम्भ करना, स्वामी श्रद्धानन्द को गुरुकुल खोलने का विचार देना, उनके द्वारा लिखी पुस्तक 'विजडम ऑफ द ऋषिज' का ऑक्सफोर्ड के पाठ्यक्रम में शामिल होना, घास-मांस के झगड़े में शाकाहार का समर्थन करना, उनका यह मानना कि आर्यसमाजियों को इसलिए सफलता नहीं मिलती क्योंकि वे वेदों को मानते हैं उसे जानते नहीं हैं, उनका यह मानना कि लोकेषणा, धन की चाह, पद की लालसा व्यक्ति को अन्धकार में लेकर जाने का मार्ग हैं (आर्यसमाज की शिथिल अवस्था का यही मुख्य कारण है), ब्रह्मचर्य का युवाओं में प्रचार करना, नास्तिक ब्रह्म समाजियों को प्रति उत्तर देना अनेक कार्य हैं।

- शेष पृष्ठ 10 पर

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

वेद-स्वाध्याय

बिना चक्रों के रथवाला कुमार

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यं कुमार नवं रथमचक्रं मनसाकृणोः। एकेषं विश्वतः प्राञ्चमपश्यन्नधि तिष्ठसि।। ऋग्वेद 10/135/3

अर्थ—हे कुमार आत्मन्! तू **(यम् नवम् रथम्)** जिस नये शरीर रथ जो कि **(अचक्रम्)** चक्रों, पहियों वाला नहीं है, को **(मनसा अकृणोः)** मन से भगाये फिरता है **(एकेषम्)** एक ही ईषा, दण्ड या भोग प्रवृत्ति जिसकी है, जो **(विश्वतः प्राञ्चम्)** सब ओर गति करता है, उस पर **(अपश्यन्)** कहाँ जाना है इसे न विचारता हुआ **(तिष्ठसि)** बैठा हुआ है।

युवावस्था के प्रारम्भ में बालक को कुमार कहते हैं। यह अवस्था पच्चीसवें वर्ष तक रहती है। लोक में जिसे कुंवारा, अविवाहित युवक कहते हैं, वह कुमार शब्द का ही अपभ्रंश है। कुमार शब्द कु+मार जिसने दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, बुराइयों को मारा हुआ है अर्थात् जो इनसे दूर है उसे कुमार कहते हैं। परन्तु आज यह सब कुछ उलटा हो गया है। आज **कुत्सितानि मारयत्येनम्** बुराइयाँ और दुर्व्यसन इसे मार रहे हैं। कुमार क्रीडायाम् धातु से इसकी निष्पत्ति होती है। इस आयु में शरीर का आरोग्य बढ़ाने के लिये व्यायाम, खेलकूद आदि की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये और साथ ही बौद्धिक विकास भी इसी आयु में होता है। बल और बुद्धि इस जीवन रथ के दो चक्र हैं जिनका समान विकास किये जाने पर यह रथ सौ वर्ष तक स्थिर रहेगा। यदि एक चक्र सुदृढ़ और दूसरा दुर्बल हुआ तो जीवन की गाड़ी भली भाँति नहीं चल पायेगी। यदि दोनों ही चक्र नहीं रहे तो यह जीवन रथ चल नहीं पायेगा। वेद ऐसे कुमार या युवक को सावधान करते हुये कहता है—

हे कुमार! **यं नवं रथमचक्रं मनसाकृणोः** जिस रथ के चक्र नहीं हैं या दुर्बल हैं उसे तू अपनी मन-मर्जी से भगाये फिर रहा है। यह रथ **एकेषम् विश्वतः प्राञ्चम्** एक ही ईषा या दण्ड वाला है। यदि यह टूट गया तो तेरी कैसी दुरवस्था होगी, यह कभी तूने विचारा है। आगे यह तेरा रथ दिशाहीन हो **विश्वतः प्राञ्चम्** सभी दिशाओं में जा रहा है। यह बिना दिशा-सूचक यन्त्र और बिना ब्रेकवाली गाड़ी है। जैसे समुद्र में दिशासूचक यन्त्र के बिना कोई जहाज संकट में पड़ जाता है क्या ऐसी ही तेरी दुर्गति नहीं हो जायेगी?

इस आयु में तेरा यह कर्त्तव्य बनता था कि सर्वप्रथम इस जीवन रथ के दो चक्र बल और बुद्धि दोनों का विकास किया जाता। जीवन की दिशा निर्धारित कर उधर जाने का लक्ष्य बनाया जाता और इसका दण्ड शुभगुणों की वृद्धि से सुदृढ़ और सुभूषित किया जाता और जब तू उस पर बैठकर जाता तो लोग चर्चा करते-देखो कोई राजकुमार चला जा रहा है। इसका उन्नत वक्षस्थल, सुपुष्ट बाहु और हाथी के समान इसकी चाल कैसी सुन्दर लग रही है। इसका देदीप्यमान मुखमण्डल बुद्धिमत्ता को प्रकट कर रहा है। धन्य है इसके माता-पिता जिन्होंने ऐसे पुत्र रत्न को जन्म दिया है।

परन्तु हाय रे दुर्दैव! आज तू इस टूटे-फूटे रथ पर **अपश्यन्नधि तिष्ठसि** मार्ग न देखता हुआ अन्धे के समान इसे दौड़ाये चला जा रहा है। जिसे दिशा का ज्ञान ही नहीं है कि मुझे किधर जाना है, उसकी दुर्दशा ही तो होती है। जैसे कोई घुड़सवार घोड़े पर चढ़कर जा रहा था कि असावधानी के कारण उसके हाथ से लगाम छूट गई। घोड़ा भी सधाया हुआ नहीं था अतः अन्धाधुन्ध हो दौड़ने लगा। मार्ग में किसी ने पूछा अरे भाई किधर को जा रहे हो? घुड़सवार ने कहा मैं किधर जा रहा हूँ इसका तो मुझे भी पता नहीं है। अब यह घोड़ा जिधर ले जाये इसकी मर्जी। क्या तेरी दशा उस घुड़सवार से निम्नतर नहीं है जिसका अपना मन ही अपने वश में नहीं है। मन की लगाम छूट गई है और इन्द्रिय घोड़े तुझे अपनी इच्छा से इधर-उधर ऊबड़-खाबड़ मार्ग में भटका रहे हैं। विषय- वासना की आन्धी ने तेरे चक्षु निमीलित कर दिये हैं। अब तू देखता हुआ भी नहीं देखता और सुनता हुआ भी नहीं सुन रहा है। परन्तु याद रहे—**सब दिन होत न एक समान। चार दिन की चांदनी फिर अन्धेरी रात।** आज बहार का मौसम है, कल पतझड़ भी आयेगी इसका भी तो विचार कर।

हे कुमार! वेद माता तेरी इस दुर्दशा पर दुःखी हो तुम्हें एक उपाय बता रही है जिसे सावधान होकर सुनोगे तो तेरी जीवन नैया भवसागर से पार हो जायेगी।

यं कुमार प्रावर्तयो रथं विप्रेभ्यस्परि। तं सामानु प्रावर्तत समितो नाव्याहितम्।।

ऋ० १०.१३५.४

हे कुमार बालक के समान अबोध जीव! जिस शरीर-रथ को तू **(विप्रेभ्यः परि)** ज्ञानी जनों से प्रेरित होकर अर्थात् उनसे सन्मार्ग का ज्ञान कर **(प्र अवर्त्तयः)** सञ्चालन करता है या करे **(तम्)** तो उसमें **(साम)** शान्ति एवं विशेष ज्ञान **(अनुप्र अवर्तत्)** प्रविष्ट हो जाता है जैसे कि किसी **(नावि)** नौका में **(समाहितम्)** भलीभाँति रखा हुआ सामान अभीष्ट स्थान पर पहुँच जाता है वैसे ही तुम्हारी जीवन-नैया का माझी परमेश्वर अथवा कोई सन्मार्ग-दर्शक होना ही चाहिये। जिस नाव में कुछ भार नहीं हो, आन्धी तूफान में उसके भी उलटने का भय बना रहता है इसे भी स्मरण करना।

तुम्हारे माता-पिता और गुरुजन ही तुम्हारे सब से अधिक हितैषी हैं इसलिये अच्छा तो यही रहेगा कि उनसे परामर्श करके आगे बढ़ो। यदि कोई सच्चा मित्र मिल जाये तो तुम्हारा अहोभाग्य होगा। महापुरुषों का संसर्ग सदा उन्नति करने वाला होता है। कमल के पत्ते पर पड़ी पानी की छोटी-सी बून्द मोती के समान सुशोभित होती है। साधु जनों के साथ वार्तालाप, उनका दर्शन, सेवा, स्मरण सदा जीवन को पवित्र करने वाला होता है। तेजस्वी लोगों की संगति से क्षुद्र पुरुष भी तेज से युक्त हो जाता है। देखो आतशी शीशा। सूर्य की किरणों के सम्पर्क से अग्नि ज्वाला को प्रकट करने लगता है अथवा सामान्य कांच का टुकड़ा सूर्य किरणों से अतिशय प्रकाशित होने लगता है। जैसे सूर्य के प्रकाश में बैठने से अन्धकार भय और शीत का निवारण हो जाता है वैसे ही सज्जन लोगों की संगति में रहने से अज्ञान-अन्धकार का निवारण हो बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश हो जाने से भय दूर हो मन को शान्ति मिलती है। *- क्रमशः*

सामयिक ज्वलन्त मुद्दे पर आधारित लेख

कुरीतियों का कुचक्र तोड़ना ही होगा

- पं. उम्मेद सिंह विशारद

भ्रान्तिया हटायें, कुरीतियां मिटायें, आर्य समाज को बढ़ाये।

किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की प्रगति एवं समुन्नति में उसकी चिन्तन पद्धति का सबसे बड़ योगदान होता है। जो समाज सत्य के सिद्धान्तों पर चलते है वे ही अमर रहते है। वास्तव में सत्य-असत्य में मूलगत भेद क्या है? असत्य वस्तु, असत्य विचार, संस्था के भीतर ही उसका तोड़ने के तत्त्व रहते है। इसी को हम अन्तर्द्वन्द कहते है। असत्य पेट में पड़ा अन्तः विरोध उसको धीरे-धीरे फोड़ता है और असत्य के भीतर छिपा हुआ सत्य अपने पैनेपन से उभर आता है। सत्य के पेट में कोई दुविधा नहीं होती, क्योंकि उसमें कोई अन्तर्द्वन्द नहीं होता। जहां भीतर दोनों हो वही संघर्ष होता है।

आर्य समाज का लक्ष्य सत्य का प्रतिपादन करना व उस पर चलना है और विश्व यदि टिका हुआ है तो यह सत्य के आधार पर टिका हुआ है। आर्य समाज एक वैचारिक और सुधारवादी संगठन है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने सत्य और अन्धविश्वासों को समाप्त करने के लिए अपना जीवन ही बलिदान कर दिया था। आर्य समाज के स्थापना के अर्ध शताब्दि बाद तक आर्य समाज ने प्रत्येक प्रकार की कुरुतियों को मिटाने में अहम भूमिका निभाई थी और विश्व में आर्य समाज ने अपनी पहचान बनाई। किन्तु जैसे-जैसे मानव समाज की सोच व कार्य कुरूतियों की ओर बढ़ने लगे थे, तो आर्य समाज को अधिक अन्दोलित होना चाहिए था किन्तु आर्य समाज शिथिल होता चला गया और जो आर्य समाज एक स्वयं में आन्दोलन था वह सिमट कर धर्म सम्प्रदाय बन गया। अपने मूल लक्ष्य से भटक गया है।

पूर्वजों की दुहाई देकर केवल उनका इतिहास बाचने से उसके अनुयायी वंशधर सम्मान के अधिकारी नहीं हो सकते। अपितु अपने पूर्वजों के कार्यो को बिना रुके थमें आगे बढ़ने से ही सच्चे अनुयायी हो सकते हैं। वर्तमान में दृष्टि उठाकर देखते हैं तो व्यक्ति ही नहीं सम्पूर्ण मानव समाज की अदूरदर्शिता की गतिविधियों में संलिप्त है। व्यक्तिगत व सामाजिक धार्मिक चरित्रों में से समझदारी ईमानदारी सत्याचरण व पुरूषार्थ दिनों दिन घटती जा रही है साथ ही इस अभाव से समूचे समाज में अनौचित्य का दौर बढ़ रहा है। फलतः वर्तमान विपन्नता भयावह होती जा रही है। इस बढ़ोतरी का दुष्परिणाम निकट भविष्य में सर्वनाशी विभीषिकाओं का रूप धारण कर सकता है इस ओर में उपेक्षा बढ़ाना भी और बरतना भी अनौचित्य बढ़ाता है उससे व्यक्ति ओर समाज दोनों का अहित होता है।

आर्य समाज के संन्यासी वर्ग व उपदेशकों को आज अत्यन्त चिन्ता करके आर्य समाज के गिरते ग्राफ को देखकर उसके विकास का मार्ग ढूंढना होगा। आज आर्य समाज को गतिशील होने की आति आवश्यकता है। आर्य समाज यज्ञों में सिमट गया है, आर्य समाज के भवनों में कैद हो गया है और जैसे सनातन धर्म के मन्दिरों में मूर्ति पूजा होती है वैसे ही आर्य समाजों में हवन करके इतिश्री समझ रहे हैं। वे भी कुछ सफेद बाल वाले आर्य समाज में देखे जाते हैं। वेद प्रचार, खण्डनात्मक उपदेश, कुरीतियों को मिटाने के कार्यक्रमों की आर्य समाजों में बहुत गिरावट आ गयी है और आर्य समाज स्वयं दिनोंदिन प्रभावशाली व्यक्तियों सिद्धान्तहीन, आर्यो पदलोलुपता के लिए संघर्षरत सदस्यों की कुरीतियों में सिमटता जा रहा है।

जबकि अन्य धर्म सम्प्रदायों के प्रचार कार्य से निरन्तर टी. वी. में मोहल्ले-मोहल्ले में समाज को अन्धविश्वास व कुरीतियां परोसी जा रही हैं। अन्धविश्वासों व रूढ़िवादियों व स्वार्थी नेतृत्व की चपेट में आया हुआ है और चारों ओर भ्रष्टाचार अनैतिकता व अनाचार के बारूद के ढ़ेर पर सारी दुनिया बैठी हुई है। इस विनाश की विभीषिका को केवल सत्य मार्गी आर्य समाज ही रोक सकता है। विकृत संस्कार विकृत मनःस्थिति विभिन्न परिस्थितियों में कौन बचायेगा। कोई चमत्कार या फरिश्ता आसमान से नहीं उतरेगा।

- शेष पृष्ठ 5 पर

ईसाई धर्मान्तरण का एक कुत्सिक तरीका – प्रार्थना से चंगाई

- डॉ. विवेक आर्य

विश्व इतिहास इस बात का प्रबल प्रमाण है कि हिन्दू समाज सदा से शांतिप्रिय समाज रहा है। एक ओर मुस्लिम समाज ने पहले तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की कोशिश की थी, अब सूफियों की कब्रों पर हिन्दुओं के सर झुकवाकर, लव जिहाद या ज्यादा बच्चे बनाकर भारत की सम्पन्नता और अखंडता को चुनौती देने की कोशिश कर रहे हैं दूसरी ओर ईसाई समाज हिन्दुओ को ईसा मसीह की भेड़ बनाने के लिए रुपये, नौकरी, शिक्षा अथवा प्रार्थना से चंगाई के पाखंड का तरीका अपना रहे हैं।

आज के समाचार पत्र में छपी खबर कि 'चर्च द्वारा दिवंगत पोप जॉन पॉल द्वितीय को संत घोषित किया गया है' ने सेमेटिक मतों की धर्मांतरण की उसी कुटिल मानसिकता की ओर हमारा ध्यान दिलाया है। पहले तो हम यह जाने कि यह संत बनाने की प्रक्रिया क्या है?

सबसे पहले ईसाई समाज अपने किसी व्यक्ति को संत घोषित करके उसमें चमत्कार की शक्ति होने का दावा करते हैं। विदेशो में ईसाई चर्च बंद होकर बिकने लगे हैं और भोगवाद की लहर में ईसाई मत मृतप्राय हो गया है। इसलिए अपनी संख्या और प्रभाव को बनाये रखने के लिए एशिया में वह भी विशेष रूप से भारत के हिन्दुओं से ईसाई धर्म की रक्षा का एक सुनहरा सपना वेटिकन के संचालकों द्वारा देखा गया है। इसी श्रृंखला में सोची समझी रणनीति के अंतर्गत पहले भारत से दो हस्तियों को नन से संत का दर्जा दिया गया था। पहले मदर टेरेसा और बाद में सिस्टर अलफोंसो को संत बनाया गया था और अब जॉन पॉल को घोषित किया गया है।

यह संत बनाने की प्रक्रिया अत्यंत सुनियोजित होती है। पहले किसी गरीब व्यक्ति का चयन किया जाता हैं जिसके पास इलाज करवाने के लिए पैसे नहीं होते जो बेसहारा होता हैं, फिर यह प्रचलित कर दिया जाता है कि बिना किसी इलाज के केवल मात्र प्रार्थना से उसकी बीमारी ठीक हो गई और यह कृपा एक संत के चमत्कार से हुई। गरीबों और बीमारी से पीड़ित जनता को यह सन्देश दिया जाता है कि सभी को ईसा मसीह को धन्यवाद देना चाहिए और ईसाइयत को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि पगान पूजा अर्थात् हिन्दुओं के देवता जैसे श्रीराम और श्रीकृष्ण में चंगाई अर्थात बीमारी को ठीक करने की शक्ति नहीं है अन्यथा उनको मानने वाले कभी के ठीक हो गए होते।

अब जरा ईसाई समाज के दावों को परीक्षा की कसौटी पर भी परख लेते हैं।

मदर टेरेसा जिन्हें दया की मूर्ति, कोलकाता के सभी गरीबों को भोजन देने वाली, अनाथ एवं बेसहारा बच्चों को आश्रय देने वाली जिसने अपने जन्म देश को छोड़कर भारत के गटरों से अतिनिर्धनों को सहारा दिया जो की नोबेल शांति पुरस्कार की विजेता थी, एक नन से संत बना दी गयी कि उनकी हकीकत से कम ही लोग वाकिफ हैं। जब मोरारजी देसाई की सरकार में धर्मांतरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ तो इन्हीं मदर टेरेसा ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर कहा था कि ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधियाँ जैसे कि शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंदकर देगा अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जायेगा। तब प्रधानमंत्री देसाई ने कहा था इसका अर्थ क्या यह समझा जाये कि ईसाइयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र है और उनका असली प्रयोजन तो धर्मान्तरण है।

यही मदर टेरेसा दिल्ली में दलित ईसाइयों के लिए आरक्षण की हिमायत करने के लिए धरने पर बैठी थी। महाराष्ट्र में 1947 में एक चर्च के बंद होने पर उसकी संपत्ति को आर्यसमाज ने खरीद लिया। कुछ दशकों के पश्चात् ईसाइयों ने उस संपत्ति को दोबारा से आर्यसमाज से खरीदने का दबाव बनाया। आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा मना करने पर मदर टेरेसा द्वारा आर्यसमाज के पदाधिकारियों को देख लेने की धमकी दी गई थी।

प्रार्थना से चंगाई में विश्वास रखने वाली मदर टेरेसा खुद विदेश जाकर तीन बार आँखों एवं दिल की शल्य चिकित्सा करवा चुकी थी। यह जानने की सभी को उत्सुकता होगी कि हिन्दुओं को प्रार्थना से चंगाई का सन्देश देने वाली मदर टेरेसा को क्या उनको प्रभु ईसा मसीह अथवा अन्य ईसाई संतो की प्रार्थना द्वारा चंगा होने का विश्वास नहीं था जो वे शल्य चिकित्सा करवाने विदेश जाती थी?

अब सिस्टर अलफोंसो का उदाहरण लेते हैं। वह केरल की रहने वाली थी। अपनी करीब तीन दशकों के जीवन में वे करीब २० वर्ष तक अनेक रोगों से स्वयं ग्रस्त रही थी। केरल एवं दक्षिण भारत में निर्धन हिन्दुओं को ईसाई बनाने की प्रक्रिया को गति देने के लिए संभवत: उन्हें भी संत का दर्जा दे दिया गया और यह प्रचारित कर दिया गया कि उनकी प्रार्थना से भी चंगाई हो जाती है।

अभी हाल ही में सुर्खियों में आये दिवंगत पोप जॉन पॉल स्वयं पार्किन्सन रोग से पीड़ित थे और चलने-फिरने से भी असमर्थ थे। यहाँ तक कि उन्होंने अपना पद अपनी बीमारी के चलते छोड़ा था।

पोप जॉन पॉल को संत घोषित करने के पीछे कोस्टारिका की एक महिला का उदाहरण दिया जा रहा है जिसके मस्तिष्क की व्याधि का इलाज करने से चिकित्सकों ने मना कर दिया था। उस महिला द्वारा यह दावा किया गया हैं कि उसकी बीमारी पोप जॉन पॉल द्वितीय की प्रार्थना करने से ठीक हो गई हैं। पोप जॉन पॉल चंगाई करने की शक्ति से संपन्न हैं एवं इस करिश्मे अर्थात् चमत्कार को करने के कारण उन्हें संत का दर्ज दिया जाये।

इस लेख का मुख्य उद्देश्य आपस में वैमनस्य फैलाना नहीं है अपितु पाखंड खंडन है। ईसाई समाज से जब यह पूछा जाता है कि आप यह बतायें कि जो व्यक्ति अपनी खुद की बीमारी को ठीक नहीं कर सकता, जो व्यक्ति बीमारी से लाचार होकर अपना पद त्याग देता है उस व्यक्ति में चमत्कार की शक्ति होना पाखंड और ढोंग के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। अपने आपको चंगा करने से उन्हें कौन रोक रहा था?

यह तो वही बात हो गई कि खुद निसंतान मर गए औरों को औलाद बख्शाते हैं। ईसाई समाज को जो अपने आपको पढ़ा-लिखा समाज समझता है इस प्रकार के पाखंड में विश्वास रखता है यह बड़ी विडम्बना है। मदर टेरेसा, सिस्टर अल्फोंसो, पोप जॉन पॉल सभी अपने जीवन में गंभीर रूप से बीमार रहे। उन्हें चमत्कारी एवं संत घोषित करना केवल मात्र एक छलावा है, ढोंग है, पाखंड है, निर्धन हिन्दुओं को ईसाई बनाने का एक सुनियोजित षडयन्त्र है। अगर प्रार्थना से सभी चंगे हो जाते तब तो किसी भी ईसाई देश में कोई भी अस्पताल नहीं होना चाहिए, कोई भी बीमारी हो जाओ चर्च में जाकर प्रार्थना कर लीजिये। आप चंगे हो जायेंगे। खेद है कि गैर ईसाइयों को ऐसा बताने वाले ईसाई स्वयं अपना इलाज अस्पतालों में करवाते हैं।

मेरा सभी हिन्दू भाइयों से अनुरोध है कि ईसाई समाज के इस कुत्सित तरीके की पोल खोलकर हिन्दू समाज की रक्षा करें और सबसे आवश्यक अगर किसी गरीब हिन्दू को इलाज के लिए मदद की जरुरत हो तो उसकी धन आदि से अवश्य सहयोग करें जिससे वह ईसाइयों के कुचक्र से बचा रहे।

......मदर टेरेसा जिन्हें दया की मूर्ति, कोलकाता के सभी गरीबों को भोजन देने वाली, अनाथ एवं बेसहारा बच्चों को आश्रय देने वाली जिसने अपने जन्म देश को छोड़कर भारत के गटरों से अतिनिर्धनों को सहारा दिया जो की नोबेल शांति पुरस्कार की विजेता थी, एक नन से संत बना दी गयी कि उनकी हकीकत से कम ही लोग वाकिफ हैं। जब मोरारजी देसाई की सरकार में धर्मांतरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ तो इन्हीं मदर टेरेसा ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर कहा था कि ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधियाँ जैसे कि शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंदकर देगा अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जायेगा। तब प्रधानमंत्री देसाई ने कहा था इसका अर्थ क्या यह समझा जाये कि ईसाइयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र है और उनका असली प्रयोजन तो धर्मान्तरण है।

यही मदर टेरेसा दिल्ली में दलित ईसाइयों के लिए आरक्षण की हिमायत करने के लिए धरने पर बैठी थी। महाराष्ट्र में 1947 में एक चर्च के बंद होने पर उसकी संपत्ति को आर्यसमाज ने खरीद लिया। कुछ दशकों के पश्चात् ईसाइयों ने उस संपत्ति को दोबारा से आर्यसमाज से खरीदने का दबाव बनाया। आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा मना करने पर मदर टेरेसा द्वारा आर्यसमाज के पदाधिकारियों को देख लेने की धमकी दी गई थी।

प्रार्थना से चंगाई में विश्वास रखने वाली मदर टेरेसा खुद विदेश जाकर तीन बार आँखों एवं दिल की शल्य चिकित्सा करवा चुकी थी। यह जानने की सभी को उत्सुकता होगी कि हिन्दुओं को प्रार्थना से चंगाई का सन्देश देने वाली मदर टेरेसा को क्या उनको प्रभु ईसा मसीह अथवा अन्य ईसाई संतो की प्रार्थना द्वारा चंगा होने का विश्वास नहीं था जो वे शल्य चिकित्सा करवाने विदेश जाती थी?.....

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph.: 011-43781191, 09650622778
E-mail: aspt.india@gmail.com

150वें जन्मदिवस (12 मई) पर विशेष लेख

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

पं. गुरुदत्त जी का जन्म 12 मई, सन् 1864 ई0 को लाला राम कृष्ण जी के यहाँ मुल्तान नगर (अब पाकिस्तान में) हुआ था। लाला जी व उनकी धर्मपत्नी, दोनों धर्म-परायण एवं साधु स्वभाव के थे। बालक का बचपन का नाम गुरांदित्ता था। इस बालक ने बाल्य-काल से ही अपनी कुशाग्र बुद्धिमत्ता का परिचय देना प्रारंभ कर दिया था। वह लाखों तक की गुणा-भाग आदि मौखिक ही कर लेता था। उर्दू, इंगलिश, फारसी भाषाएं उसने अल्पायु में ही अत्यन्त सुगमतापूर्वक सीख ली थीं। वह बचपन से ही अति जिज्ञासु था तथा अनेकानेक प्रश्न पूछता रहता था। ला0 रामकृष्ण जी उन दिनों झंग जिला (अब पाकिस्तान) में एक कुशल अध्यापक के रूप में कार्यरत थे। वे अपने बालक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर बड़ी सावधानी से दिया करते थे।

उस समय के प्रचलन अनुसार गुरां दित्ता का विवाह छोटी आयु में ही हो गया था। बाद में सन् 1878 में वे मुल्तान के उच्च विद्यालय में प्रविष्ट हुए। वहीं से वे संस्कृत भी सीखने लगे। महर्षिकृत 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पढ़ लेने पर उनकी संस्कृत में रूचि और भी बढ़ गई। अत: कुछ समय पश्चात् ही अष्टाध्यायी भी पढ़ गए।

जब वे दशम कक्षा के छात्र थे, उन्हे 'सत्यार्थ प्राकाश' पढ़ने को मिला तभी से वे आर्य समाज की ओर आकर्षित होकर आर्यसमाज, मुलतान के सदस्य जा बने। यह एक चिर-स्मरणीय ऐतिहासिक घटना थी। यही से उनके सार्वजनिक जीवन का शुभारम्भ हुआ। छात्र काल से ही उन्होने एक सत्यवादी कुशल वक्ता, कुशाग्र कवि, योगधारी आदि के रूप में अपनी छाप बना ली थी।

सन् 1981 में वे लाहौर कॉलेज में प्रविष्ट हुए। हंसराज व लाजपत राय उनके सहपाठी थे तभी वे लाहौर आर्यसमाज के सदस्य भी बने। वे छात्रों के बीच आर्य समाज का गुणगान करते न अघाते थे। सन् 1882 में आर्यसमाज ने हिन्दी को पंजाब राज्य की जनभाषा बनाने हेतु एक आन्दोलन चलाया। ऐसे में गुरुदत्त पीछे कैसे रहते? उन्होंनें सहस्रों छात्रों से हस्ताक्षर करवाए व वह ज्ञापन सरकार को दिया। उन्हीं की प्रेरणा से लाजपत राय ने संस्कृत सीखी। हंसराज जी व लाजपत राय जी आर्यसमाज के अनमोल रत्न थे। इन दोनों को आर्यसमाज में लाने का श्रेय भी पं. गुरुदत्त को जाता है।

कालेज के दिनों में एक बार वे मुलतान गए हुए थे। वहाँ पर एक मुख्य अध्यापक ने आर्य समाज के विरुद्ध भाषण दिया। इसके उत्तर में गुरुदत्त ने इंगलिश भाषा में अकाट्य प्रमाणों सहित जो उत्तर दिए उन्हें सुनकर वहा के बैठे अनेक विदेशी श्रोता भी दाँतो तले उंगली दबाए रह गए।

गुरुदत्त विज्ञान के परिपोषक थे। वे चाहते थे कि लोगबाग वैदिक धर्म को विज्ञान की कसौटी पर परख कर ही अपनाएँ। इसीलिए उन्होनें लाहौर में 'आर्यसमाज साइंस इंस्टीच्यूट' स्थापित की थी। उन्होनें विज्ञान को लोकप्रिय बनाने में भारी योगदान दिया। यह विज्ञान, शोध को भारतीय संस्कृत से जोड़ने का शुभारम्भ था। यहीं से गुरुदत्त उन वैज्ञानिकों के अग्रणी बन गए जो भारत में विज्ञान को लोक प्रिय बनाने में जुटे थे। सन् 1883 में गुरुदत्त ने इन्टरमीडिएट की परीक्षा में पूरे पंजाब में प्रथम स्थान पाया। उसी वर्ष महर्षि की हत्या के षड्यन्त्र में सफलता स्पष्ट दिख रही थी। उन्हे रुग्णावस्था में अजमेर पहुँचाया गया। आर्यसमाज लाहौर से 19 वर्षीय गुरुदत्त को ऋषिवर की सेवा में भेजा गया। इस समाज के उप प्रधान जी उनके संग थे। वे (गुरुदत्त) अनन्य श्रद्धा से महर्षि की सेवा में जुटे रहे। परन्तु रोग तो पहले ही भयंकर स्थिति को पार कर चुका था। 30 अक्टूबर, सन् 1883 को सायं 5:30 बजे के आस-पास

- शेष पृष्ठ 5 पर

मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी की संस्थापिका अध्यक्ष आचार्या डॉ. पुष्पावती का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी की संस्थापिका अध्यक्ष आचार्य डॉ. पुष्पावती जी का शनिवार 3 मई, 2014 को प्रात:काल निधन हो गया। वे लगभग 90 वर्ष की थीं। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन वाराणसी में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। अन्तिम संस्कार के समय मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी एवं महर्षि पाणिनी कन्या गुरुकुल वाराणसी की ब्रह्मचारिणियों ने वैदिक मन्त्रोच्चार किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य एवं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर वाराणसी के सैंकड़ों गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

आचार्या डॉ. पुष्पावती जी की शिक्षा-दीक्षा पंजाब में हुई। उन्होंने अष्टाध्यायी और निरुक्त अदि का अध्ययन किया। उनकी इच्छा थी कि आर्यसमाज का वहां अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए जहां पाखण्ड का अधिक बोलबाला है। इसी विचार को ध्यान में रखते हुए वाराणसी उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र चुना, जहां पाखण्ड अपने चरम पर था। वहां उन्होंने मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल की स्थापना की और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से उसे सम्बद्ध कराया। उन्होंने आजीवन ब्रह्मचारिणी रहते हुए इस गुरुकुल में आर्य कन्याओं को अच्छे संस्कार देने में अपना सारा जीवन लगा दिया। इन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति और गुरुकुल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को सौंप दी है। **परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्‌गति एवं हम सबको उनके पदचिह्नों पर चलने की शक्ति, सामर्थ्य एवं प्रेरणा प्रदान करे, जिससे हम गुरुकुल को और अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचा सकें।**

आचार्य डॉ. पुष्पावती जी के पार्थिव शरीर पर माल्यार्पण करते सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य एवं महामन्त्री श्री विनय आर्य। अन्तिम संस्कार कराते सभा प्रधान जी।

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि ने एक व्यक्ति को अपने पास बुला कर कुछ कहा। वह थे महाशय गुरुदत्त जी। शेष सब लोग पर्याप्त दूरी पर थे। उसी दिन के सूर्यास्त के कुछ बाद सोए देश को जगाने वाला महर्षि-रूपी वह 'महादिवाकर' भी सदा हेतु अस्त हो गया। परन्तु जाते-जाते महर्षि ने वैदिक धर्म-प्रचार की मशाल गुरुदत्त रूपी शिष्य को सौंप दी थी। लाहौर लौटकर गुरुदत्त ने ऋषिवर का एक भव्य स्मारक बनाए जाने की योजना प्रस्तुत की। इसे डी.ए.वी. संस्थाओं के रुप में स्थापित किया जाना था। लोगों ने धनादि के अम्बार लगा दिए। सन् 1885 में गुरुदत्त बी0 ए0 की परीक्षा में सर्वप्रथम रहे। बाद में वे एम0 ए0 (विज्ञान) परीक्षा में भी प्रथम घोषित किए गए। सन् 1886 में उनके स्वस्थ्य में खराबी स्पष्ट दिखने लगी थी। फिर भी वे धर्म-प्रचार में जुटे रहे। तब तक वे 'पंडित गुरुदत्त' कहलाने लगे। उनके प्रभाव से ही ला0 लाजपत राय राष्ट्रवादी नेता बन गए थे। सन् 1887 ई0 में पंजाब विश्व विद्यालय की सीनेट ने पं0 गुरुदत्त का नाम अतिरिक्त सहायक आयुक्त की परीक्षा हेतु अनुमोदित किया। परंतु उनके लिए ऋषिकार्य से बढ़कर कुछ अन्य न था। इसी वर्ष उन्हे राजकीय महाविद्यालय में सीनियर प्रोफेसर का पद मिला। यह पद पाने वाले पहले भारतीय थे। पिता के परलोक सिधारने पर भी वे धर्म-प्रचार से

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी...

पीछे नहीं हटे।

30 दिसम्बर 1887 को तेज बुखार होने पर भी उन्होंने अजमेर में अपना व्याख्यान दिया। सदा की भांति श्रोतागण उन्हे मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहे। ऐसे-ऐसे अनेक उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि धर्म-प्रचार हेतु वे प्रत्येक स्थिति में अग्रणी रहते थे। छोटी-सी आयु में ही वे भाषण-कला में प्रवीण हो गए थे। इसी कारण से लोग उनके विचारों को सुनने के लिए लालायित रहते थे।

पं0 गुरुदत्त अदम्य साहस के प्रतीक थे। एक बार एक अंग्रेज द्वारा अभद्र-अवाँछनीय् व्यवहार किए जाने पर इन्होंने उसकी पिटाई कर दी। ऐसी साहसपूर्ण घटना अंग्रेजी राज्य में इससे पूर्व कभी देखी-सुनी न गई। अतः पण्डित जी को प्रथम क्रान्तिवीर कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। वे वैदिक-ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना चाहते थे। यद्यपि उनका शरीर उनका साथ न दे रहा था फिर भी वे अपने उद्देश्य से किंचितमात्र भी पीछे नहीं हटे। इस सब के परिणाम आर्य-जगत हेतु बड़े भयावह रहे। पण्डित जी-जान से धर्म-प्रचार में लगे रहे। उनका शरीर क्षतिग्रस्त होता रहा। अन्ततः 19 मार्च, 1890 को वे परलोक सिधार गए। आर्यसमाज के लिए यह एक अपूर्णीय क्षति थी। ऐसे महावीर यदा-कदा ही आते हैं। उनसे प्रेरणा पाकर हम सब अपनी इस संस्था को उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर कर सकते हैं। - ***सुखदेव आर्य***

634-बी, श्रीनगर, पो0

शकूरबस्ती, दिल्ली-34

पृष्ठ 2 का शेष

सम्पूर्ण संसार के मानवों का वर्तमान युग सत्य का आधार खो चुका है। कुरीतियां सत्य का गला घोटने से बढ़ती है। आर्य समाज के मंदिरों में यज्ञों व संगठनों की विभिन्नता हो रही है। आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव आधुनिक संगीतों से परोसे जा रहे हैं। खण्डन मण्डन की रीति समाप्त हो गयी है। समाजिक कुरीतियों का विरोध समाप्त हो गया है। एक प्रकार से आर्य समाज व उसका नेतृत्व संसार के अन्धविश्वासों के कुएँ में शनैः-शनैः घुल मिल रही है।

हमारे चारों ओर से जो धार्मिक अन्धविश्वास, कदम-कदम पर सामाजिक कुरीतियों व पाश्चात्य संस्कारों की प्रचलन व टी.वी. चैनलों पर अन्धविश्वास परोसने की धूल जो चारों ओर आर्य समाज पर पड़ रही है। इस धूल को झाड़ना ही होगा। आज हम यज्ञ के मन्त्रों में **इदन्नमम** व संध्या के मनसा परिक्रमा के मंत्रों **एभ्यो अस्तु यो द्वेष्टि यवं** आदि के मंत्रों के अर्थों को न जानकर तोता रटन कर रहे है। हमें आर्य बनना होगा, आर्य समाजी नहीं और महर्षि दयानन्द जी ने जो सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि में जो सिद्धान्त दिए है उस पर मजबूती से चलना होगा। साप्ताहिक संत्सगों में सपरिवार जाना होगा और सम्पूर्ण समाज में फैले हुए अन्ध विश्वासों से टकराना होगा। हम आर्यों को अपने परिवारों के विवाह संस्कारों में सादगी लानी होगी। सोलह संस्कारों का प्रचलन करना होगा। यदि हम ऋषि के सच्चे भक्त है तो मेरे पूर्ण लेख पर विचार करने का कष्ट करे। - ***वैदिक प्रचारक, गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून***

मो0 - 9411512019

प्रतिभा निर्माण योजना कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, (कांकरिया) अहमदाबाद द्वारा 23 अप्रैल 2014 को आर्यसमाज गाँधीनगर में 12 वर्ष से 16 वर्ष के विद्यार्थियों के शरीरिक, आत्मिक एवं बौद्धिक विकास हेतु 'प्रतिभा निर्माण योजना' के अन्तर्गत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें तीन प्रकार की प्रतियोगिताओं 1. रमत-गमत प्रतियोगिता 2. चित्रकला प्रतियोगिता 3. प्रतिभा दर्शन प्रतियोगिताएं हुई।

कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य शैलेन्द्रजी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ द्वारा किया गया। प्रतिभा निर्माण योजना का उद्देश्य बताते हुए आचार्य शैलेन्द्रजी शास्त्री ने कहा कि बालक बालिकाओं के शारीरिक, आत्मिक एवं बौद्धिक विकास के लिए शैक्षणिक और धार्मिक संस्थानों को आगे आना होगा तभी हमारे युवा संस्कारित और चरित्रवान बनेंगे। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आर्यसमाज द्वारा आज ऐसा कार्यक्रम रखा गया है।

प्रतिभा निर्माण योजना के प्रथम सत्र के कार्यक्रम को प्रारम्भ करते हुए सर्वप्रथम श्री शैलेन्द्र शास्त्री जी ने बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य लाभ के लिये सभी बच्चों को कुछ समय तक योग तथा प्राणायाम का अभ्यास कराया और उसके लाभ बताये। योगाभ्यास के बाद सरस्वती शिशु मन्दिर के उपाचार्य श्री पंकज जी के निर्देशन में खेलकूद का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। रमत-गमत प्रतियोगिता के अन्तर्गत सर्वप्रथम नीबू चम्मच दौड़, कोथड़ा दौड़, संगीत कुर्सी तथा रींग रोल प्रतियोगिताऐं कराई गयीं।

द्वितीय सत्र में चित्रकला प्रतियोगिता तथा प्रतिभा प्रदर्शन प्रतियोगिताएं हुई। इस सत्र को प्रारम्भ करने से पूर्व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कड़ी कैम्पस के डायरेक्टर श्री डॉ. सोभाभाई पटेल, सरकारी आयुर्वेदिक चिकित्सालय के डॉ. धर्मेन्द्रभाई पटेल, तथा सभी प्रतियोगिताओं की मुख्य निर्णायिका श्रीमती रश्मि बहन का गायत्री मंत्र के पीत वस्त्र द्वारा तथा स्मृति चिह्न भेंटकर स्वागत किया गया। प्रतियोगिता में स्वामी दयानन्द सरस्वती का चित्र बनाने को दिया गया। इस प्रतियोगिता में कई विद्यार्थियों ने बहुत ही सुन्दर चित्र बनाये। आर्यसमाज के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल ने प्रतिभा निर्माण योजना का उद्देश्य बताते हुए कहा कि आज सन्तान-निर्माण की सर्वाधिक आवश्यकता है। जब तक सन्तान का उचित निर्माण नहीं होगा तब तक श्रेष्ठ एवं समृद्ध भारत का स्वप्न निराधार होगा। अच्छा होगा कि समय रहते हुए बच्चों के माता-पिता और शिक्षक तथा शैक्षणिक, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाएँ इस महत्त्वपूर्ण कार्य में आगे आयें। सच्चे अर्थों में प्रतिभा निर्माण का कार्य ही राष्ट्र निर्माण का कार्य है। आर्यसमाज इस कार्य को निरन्तर चालू रखेगा।

आस्था भजन चैनल - प्रसारण (Telecast) अनुसूची (प्रतिदिन रात्रि 8.00 से 8.30 बजे तक)

दिनांक	कार्यक्रम	विषय
12.05.2014	प्रवचन - आचार्य ज्ञानेश्वर जी	प्रेरक प्रवचन–हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य (भाग 3)
13.05.2014	प्रवचन - आचार्य सत्यजित् जी	योग दर्शन (भाग 3)
14.05.2014	प्रवचन - श्री चंद्रेश जी आर्य	ज्ञान, कर्म, उपासना (भाग 3)
15.05.2014	प्रवचन - आचार्य सत्यप्रकाश जी	सच्चे ईश्वर को जानें (भाग 1)
16.05.2014	प्रवचन - आचार्य डॉ. वागीश जी शर्मा	हम और हमारा देश (भाग 2)
17.05.2014	वैदिक भजन	विचार संगीत (भाग 8)
18.05.2014	विचार परिचर्चा (TALK SHOW)	विचार मंथन (भाग 1)
19.05.2014	प्रवचन - आचार्य ज्ञानेश्वर जी	हमारा सामाजिक कर्तव्य(भाग 4)
20.05.2014	प्रवचन - आचार्य सत्यजित् जी	योग दर्शन (भाग 4)
21.05.2014	प्रवचन - श्री चंद्रेश जी आर्य	ज्ञान, कर्म, उपासना (भाग 4)
22.05.2014	प्रवचन - आचार्य सत्यप्रकाश जी	सच्चे ईश्वर को जानें (भाग 2)
23.05.2014	प्रवचन - आचार्य डॉ. वागीश जी शर्मा	हम और हमारा देश (भाग 3)
24.05.2014	प्रवचन - आचार्य ज्ञानेश्वर जी	क्रियात्मक योगाभ्यास (भाग 1)
25.05.2014	प्रवचन - आचार्य सत्यजित् जी	शंका समाधान (भाग 1)
26.05.2014	प्रवचन - श्री चंद्रेश जी आर्य	ज्ञान, कर्म, उपासना (भाग 5)
27.05.2014	प्रवचन - आचार्य सत्यप्रकाश जी	ईश्वर उपासना से लाभ (भाग 2)
28.05.2014	प्रवचन - आचार्य डॉ. वागीश जी शर्मा	व्यक्ति, परिवार, और समाज (भाग 4)
29.05.2014	वैदिक भजन	विचार संगीत (भाग 3)
30.05.2014	विचार परिचर्चा (TALK SHOW)	विचार मंथन (भाग 2)
31.05.2014	प्रवचन - आचार्य ज्ञानेश्वर जी	क्रियात्मक योगाभ्यास (भाग 2)

विचार टी. वी द्वारा निर्मित कार्यक्रमों का दैनिक प्रसारण दि.1 जून 2014 से हर रोज रात्रि 9:30 बजे से आस्था चैनल पर शुरु होने जा रहा है। इसमें अपना विज्ञापन सहयोग करने की भावना रखने वाले व्यक्ति या संस्था इसके विषय मे अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया श्री धर्मेश आर्य (कार्यकारी निदेशक) से मो. 07738070401 पर संपर्क करें।

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीरों हेतु	आर्य वीरांगनाओं हेतु
25 मई से 1 जून, 2014	18 मई से 25 मई, 2014
स्थान : डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल, सैक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली-85	स्थान : दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार, दिल्ली-95
शिविर शुल्क 250/- रुपये प्रति शिविरार्थी	शिविर शुल्क 300/- रुपये प्रति शिविरार्थी

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने बालक/बालिकाओं को व आर्य वीर/वीरांगना दल शाखा के प्रत्येक आर्यवीर एवं वीरांगना को शिविर मे भाग लेने लिए प्रेरित करें।

निवेदक

जगवीर आर्य	बृहस्पति आर्य	सुनीति आर्या	लिपिका आर्या
संचालक	महामन्त्री	संचालिका	मन्त्राणी
9810264634	9560343777	9868348663	9811203087

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में

राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर

1 जून से 8 जून, 2014

स्थान : श्रीमहर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, राजकोट (गुजरात)

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के गठन के 11 वर्ष पूर्ण होने पर 12वां राष्ट्रीय शिविर ऋषि जन्मभूमि टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। सभी प्रान्तीय सभाओं, जिला समाजों व गुरुकुलों में जहां वीरांगना दल की शाखाएं लगती है से प्रार्थना है कि वे अपनी चुनी हुई वीरांगनाओं को इस शिविर में अवश्य भेजें।

शिविर शुल्क : 250/- रुपये है। शिविरार्थी की आयु न्यूनतम 15 वर्ष हो। नामांकन की अन्तिम तिथि 31 मई, 2014 है। भाग लेने हेतु सम्पर्क करें -

साध्वी डॉ. उत्तमायति	मृदुला चौहान	विमल मल्लिक	रामनाथ सहगल
प्रधान संचालिका	संचालिका	कोषाध्यक्ष	मन्त्री
9672286863	9810702762	9810274318	टंकारा ट्रस्ट

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक मिशन मुम्बई ने आर्यसमाज सान्ताक्रुज में 22-23 मार्च को अपना वार्षिकोत्सव मनाया। इसका मुख्य विषय था - वैदिक विरक्त सम्मेलन, जिसका संचालन स्वामी प्रणवानन्द जी ने किया। इस कार्यक्रम में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित मुख्य तीन ग्रन्थों की समीक्षा की गई तथा श्रोताओं को बताया गया कि इन ग्रन्थों से स्वस्थ समाज की रचना कैसे हो सकती है। इस सम्मेलन में आए संन्यासियों, आचार्यों एवं प्राध्यापको ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने 'फलित ज्योतिष, ज्योतिष नही है' इस विषय पर व्याख्यान देकर जनता को ज्योतिषों के चक्कर में न पड़ने के लिए सावधान किया। इस अवसर पर डॉ. सोमदेव शास्त्री जी की पुस्तक 'चतुर्वेद परिचय' का विमोचन भी किया गया।

- सन्दीप आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज सुन्दर विहार दिल्ली का

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सुन्दर विहार दिल्ली-87 का वार्षिकोत्सव समारोह 18 से 20 अप्रैल, 2014 मनाया गया। भजन आचार्य योगेन्द्र शास्त्री जी तथा प्रवचन आचार्य राजू वैज्ञानिक जी ने दिए। प्रतिदिन लगभग 200 लोगों ने पहुंचकर भजन-प्रवचनों का आनन्द प्राप्त किया। समापन समारोह के अवसर पर हॉलैण्ड में वेद प्रचार के कार्यों मे संलग्न श्रीमती शकुन्तला जी, पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री रवि चड्ढा, मंडल के मन्त्री श्री राजेन्द्र लाम्बा का स्वागत किया गया। आर्यसमाज की युवा शक्ति को भी सम्मान दिया गया।

- अमरनाथ बत्रा, मन्त्री

आर्ष गुरुकुल आबू, सिरोही का

24वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबू पर्वत, जिला सिरोही राजस्थान का 24वां वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह 31 मई से 2 जून, 2014 तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रतिदिन 6:30 से 8 बजे तक पं. कमलेश कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ होगा जिसके आचार्य ब्र. ओमप्रकाश आर्य होंगे। जो अभिभावक अपने बच्चों को गुरुकुल में प्रवेश कराने के इच्छुक हों वे 31 मई को गुरुकुल पहुंचें 1 जून को प्रवेश परीक्षा के उपरान्त 2 जून को प्रवेश परीक्षा में सफल छात्रों का वेदारम्भ संस्कार किया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए मो. 9414589510, 8764218881 पर सम्पर्क करें।

-स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, अध्यक्ष

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

न्यायदर्शन की मान्यताएँ पुरस्कृत-सम्मानित

प्रख्यात साहित्कार एवं वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया के ग्रन्थ 'न्याय दर्शन की मान्यताएँ' को श्रीमती गिना देवी स्मृति साहित्य सम्मान से सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया है। गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी की ओर से प्रदत्त इस सम्मान में जहाँ इस ग्रन्थ की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की गई है वहाँ सम्मान राशि के साथ सम्मान पत्र भी प्रदान किया गया है।

इस ग्रन्थ में महर्षि गौतम प्रणीत न्यायदर्शन की मान्यताओं को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया गया है। तत्त्वज्ञान के बिना न तो मिथ्याज्ञान का नाश संभव है, न अपवर्ग अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति ही। तत्त्वज्ञानी जन्म मरण के बन्धन से छूट जाता है और मिथ्याज्ञानी आवागमन के चक्र में फँसा रहता है। मोक्ष की कामना करने वाले प्रत्येक साधक को यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिए।

- चन्द्रशेखर शास्त्री

आवश्यकता है

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, मुजफ्फर नगर-251316(उ.प्र) को गुरुकुल में प्रबन्धकीय वेतन पर एक प्राचीन व्याकरण पढ़ाने हेतु व्याकरणाचार्य, संरक्षक, रसोइया एवं कम्प्यूटर शिक्षक की आवश्यकता है। इच्छुक प्रार्थी अपने प्रमाण पत्र शीघ्र भेजें। *- आचार्य इन्द्रपाल, मुख्याधिष्ठाता, मो. 9411929528*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मोलडबन्द विस्तार बदरपुर, नई दिल्ली-44

प्रधान : श्री श्याम सिंह यादव
मन्त्री : श्री गजेन्द्र सिंह चौहान
कोषाध्यक्ष : श्री रणजीत सिंह रावत

आर्यसमाज राजनगर, महरौली रोड, पालम कालोनी, दिल्ली

प्रधान : श्री धर्मेन्द्र आर्य
मन्त्री : श्री रतन आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री कर्मबीर आर्य

आर्यसमाज अशोक विहार-1 एफ ब्लाक, दिल्ली

प्रधान : श्री राममेहर सिंह
मन्त्री : श्री जीवनलाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री ओम प्रकाश गुप्ता

आर्यसमाज सूरसागर जोधपुर (राजस्थान)

प्रधान : श्री किशनलाल गहलोत
मन्त्री : श्री नरसिंह सोलंकी
कोषाध्यक्ष : श्री नरपत सिंह गहलोत

आर्यसमाज सज्जन नगर उदयपुर (राज.)

प्रधान : श्री हुकमचन्द शास्त्री
मन्त्री : श्री सौरभदेव आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री अशोक उदावत

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर तलवंडी, कोटा (राज.)

प्रधान : श्री रघुराज सिंह कर्णावत
मन्त्री : श्री भैरोलाल शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री शिवदयाल गुप्ता

प्रथम पृष्ठ का शेष

महाशय धर्मपाल .....

भी दिक्कत नहीं आएगी। इसी दृष्टि से विद्यालय का प्रथम सत्र का आशीर्वाद समारोह दिनांक 29 अप्रैल, 2014 को आयोजित किया गया। नव प्रविष्ट बच्चों को अपना आशीर्वाद देने के लिए स्वयं महाशय धर्मपाल जी पहुंचे। उन्होंने अपने उद्बोधन मे कहा कि यह विद्यालय अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद के जन्मक्षेत्र आदिवासी जिला झाबुआ एवं निकटवर्ती क्षेत्रों में उच्च कोटि की शिक्षा का केन्द्र होगा।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि दयानन्द सेवा श्रम संघ केवल शिक्षा ही नहीं देता है अपितु आदिवासी भारतीयों को अपनी संस्कृति से जुड़े रहने के लिए नींव का पत्थर बनकर कार्य करता है। आशा है आदिवासी क्षेत्र झाबुआ में यह विद्यालय भारतीय संस्कृति की नींव को और मजबूती प्रदान करेगा और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में मील का एक पत्थर साबित होगा। समारोह की अध्यक्षता माता प्रेमलता शास्त्री ने की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री राजीव आर्य, दिल्ली प्रभारी श्री जोगेन्द्र खट्टर, निर्माण कार्य में सहयोगी श्री नरेन्द्र नारंग ने भी पहुंचकर समारोह की शोभा को बढ़ाया।

विद्यालय का भवन

विद्यालय परिसर में स्वागत

श्री नरेन्द्र नारंग एवं आचार्य जीववर्धन जी

श्री अनिल अरोड़ा जी

श्री प्रकाश आर्य एवं श्री प्रेम अरोड़ा जी

विद्यालय के ब्रॉसर का लोकार्पण करते महाशय जी एवं अन्य

बच्चों द्वारा स्वागत, 92 वर्षीय श्री बजाज से आशीर्वाद एवं सम्मान प्राप्त करते महाशय धर्मपाल जी

विद्यालय की बस वैन एवं जीप का उद्घाटन एवं प्रधानाचार्य श्री प्रवीण अत्रे जी को गाड़ियों की चाबी सौंपते महाशय जी।

(बांए) नव प्रविष्ट बच्चों के साथ महाशय जी साथ में हैं विशिष्ट अतिथि श्री प्रकाश आर्य जी, समारोह की अध्यक्ष माता प्रेमलता शास्त्री, स्थानीय विधायक सुश्री निर्मला भूरिया, श्री सुशील त्रेहन जी, श्री गोविन्दलाल अग्रवाल एवं लोकसभा प्रत्याशी श्री दिलीप भूरिया। (दाए) मंचस्थ अतिथियों के साथ मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी।

आर्य संस्थाओं के अनाथालयों, वनवासी कल्याणाश्रमों में शिक्षित युवक-युवतियों के हों वैवाहिक परिचय सम्मेलन

– आचार्य अग्निमित्र शास्त्री

पिछले कुछ वर्षों में आर्य समाज में एक नई क्रांति का प्रारम्भ होता दिखाई दिया। एक समान गुण कर्म और स्वभाव वाले युवक-युवतियों का ही विवाह होना चाहिये। महर्षि दयानन्द की इस विचारधारा का व्यापक रूप से कार्यान्वयन आर्य समाज में होता नजर आया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक समान विचारधारा वाले आर्य संस्कारों से युक्त युवक-युवतियों के वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किये गये जिसमें अनेक युवक-युवतियां परस्पर विवाह सम्बन्ध में बंधे और आर्य संस्कारों युक्त नई पीढ़ी के निर्माण का महान यज्ञ प्रारम्भ हुआ।

आर्य समाज द्वारा जिस वैवाहिक परिचय सम्मेलन रूपी पौधे का रोपण किया गया वह पल्लवित होकर वृक्ष का रूप धारण करे। इसके पल्लवन के लिए एक समग्र कार्य योजना बनाकर कार्य करने की आवश्यकता है।

इसमें केवल आर्य समाज ही नहीं अपितु इसके द्वारा संचालित समस्त अनुषांगिक संस्थाएँ अपना अमूल्य योगदान दे सकती है। क्यों यहां प्रत्यक्ष रूप से आर्य समाज उपस्थित नहीं है वहां ये अनुषांगिक संस्थाएं ही महर्षि के मिशन को विभिन्न सेवा प्रकल्पों के माध्यम से आगे बढ़ा रही हैं। आर्य समाज के इस संकल्प में निम्न संस्थाओं की भूमिका अग्रणीय है।

आर्य समाज द्वारा संचालित अनाथालय

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में ही फिरोजपुर में अनाथालय की स्थापना की। इससे प्रेरणा प्राप्त कर आर्यसमाज द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में अनाथालयों की स्थापना की गई और वर्तमान में ये अनाथालय व्यवस्थित रूप से चल रहे हैं। आर्य समाज के ये अनाथालय, इनमें रहने वाले बालक बालिकाओं का एक परिवार की तरह पालन, पोषण कर संरक्षक के दायित्व का निर्वहन करते हैं। साथ ही यज्ञ सत्संग के माध्यम से संस्कारवान नागरिक बना देश के लिए समर्पित करते हैं।

आर्य अनाथालय में पले-बढ़े ये युवक-युवतियां जब कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ते हैं। तब पारिवारिक आधार न होने के कारण इन्हें विवाह के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है। साथ ही यदि किसी प्रकार विवाह तय भी हो जाये तो समान विचारधारा वाला जीवनसाथी मुश्किल से मिलता है, ऐसे में कुंठाग्रस्त हो बेमेल विचारों, योग्यता तथा कर्म वाले जीवनसाथी से विवाह करना पड़ता है, संस्कारवान जीवनसाथी की बात तो बहुत दूर की है। इसी प्रकार युवतियों को भी विवाह सम्बन्धी इससे भी अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है, क्योंकि समान विचार, गुण, कर्म तथा स्वभाव वाले जीवनसाथी के न मिलने के कारण दुर्भाग्यवश यदि किसी कारण से विवाह विच्छेद जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाए तो पारिवारिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि के अभाव में तथा कोई मददगार न होने के कारण जीवन नरकमय हो जाता है।

इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि आर्य समाज इन्हें भी विवाह के लिए समान अवसर एवं मंच प्रदान करे। इस विषय में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य के भी यही विचार हैं कि जब आर्य समाज पिता बनकर इनके लालन पालन का कार्य करता है तो उसका और अधिक कर्त्तव्य बन जाता है कि इनके विवाह की व्यवस्था भी आर्य समाज करे।

इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि आर्य समाज संचालित इन समस्त अनाथाश्रमों को एक साथ जोड़कर उनमें रहने वाले विवाह योग्य युवक-युवतियों के परस्पर वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किये जाएं या आर्यसमाज द्वारा विभिन्न अवसरों पर आयोजित किये जाने वाले वैवाहिक परिचय सम्मेलनों में इन युवक-युवतियों को सादर आमन्त्रित किया जाए और उनका वैवाहिक जीवन मार्ग प्रशस्त कर पालक पिता की भूमिका का पूर्ण रूप से निर्वहन किया जाए।

वनवासी कल्याणाश्रम

आर्यसमाज द्वारा सुदूर छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा देश के सुदूर पूर्वोत्तर क्षेत्रों में वनवासी कल्याण आश्रम संचालित किये जा रहे हैं। गुरुकुल के समान इन कल्याण आश्रमों में सैंकड़ों की संख्या में वनवासी, आदिवासी छात्र-छात्राएं अध्ययन करते हैं। आर्य समाज के संस्कारों से ओत-प्रोत जीवन का नवनिर्माण करते हैं। किन्तु इनके साथ ही वहीं गुरूकुल के स्नातक स्नातिकाओं के साथ होने वाली विवाह समस्या आती है कि अध्ययन के उपरान्त जब ये कल्याण आश्रमों से बाहर जाकर अपने-अपने क्षेत्रों में आर्य समाज का प्रचार करते हैं तो इन्हें विवाह के लिए अपने समुदाय की ओर ही ताकना पड़ता है और बिना समान विचारधारा वाले युवक या युवती के साथ विवाह करने के कारण जिन परम्परागत कुरीतियों, अंधविश्वासों तथा अशिक्षा से उन्होंने मुक्ति पाई थी फिर से अपने जीवनसाथी को अपने विचारों के अनुकूल बनाने में ही व्यतीत हो जाता है और उनके द्वारा आर्य समाज के प्रचार का वह कार्य अधूरा ही रह जाता है। युवतियों को और भी अधिक समस्या का सामना करना पड़ता है। पति के वशीभूत होकर कई बार उनकी कुप्रथाओं, कुरीतियों को मानना पड़ता है जिससे बड़ी मुश्किल से छुटकारा पाया था। ऐसे में समय आ गया है कि आर्य समाज की संस्थाएं वनवासी कल्याणाश्रमों में रहने वालों के लिए भी समान विचार, गुण, कर्म तथा स्वभाव वाले युवक-युवती से विवाह के लिए अवसर उपलब्ध कराये।

आर्यो! आर्य समाज द्वारा यदि इन अनाथालयों तथा वनवासी कल्याणाश्रमों में रहने वाले पढ़ने वाले युवक-युवतियों को यदि महर्षि दयानन्द की विचारधारा के अनुरूप समान गुण, कर्म तथा स्वभाव वाले युवक या युवती से विवाह के अवसर उपलब्ध कराये जाएं तो निश्चित रूप से आर्य समाज का देश की विवाह संस्था पर एक महान उपकार होगा और वेद का समता तथा समानता का आदेश आर्य समाज द्वारा यथार्थ रूप में परिणत होता दिखाई देगा।

2/279, स्वामी विवेकानन्द नगर
कोटा (राजस्थान)- 324010
मो. 09929511031

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

8-9वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

15 जून, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.)

20 जुलाई, 2014 : आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के 8 वें एवं 9वें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **8वां सम्मेलन रविवार, 15 जून 2014 को प्रातः 10 बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र)** में तथा **9वां सम्मेलन 20 जुलाई, 2014 को आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली** मे आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **(इन्दौर हेतु) 1 जून, 2014** तथा **दिल्ली हेतु 5 जुलाई, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **सम्मेलन के आयोजन के दिन भी दोनों स्थानों पर तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी।** तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम सप्लीमैंट्री पुस्तिका में प्रकाशित किए जाएंगे। जोकि सभी प्रतिभागियों को 15 अगस्त, 2014 तक भेजी जाएगी।

निवेदक : श्री अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)

अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2014 का दो देशों में आयोजन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सन् 2006 से प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाता है उसी श्रृंखला में अभी तक 7 सम्मेलन सम्पन्न हो चुके हैं जिनमें से पांच अमेरिका, मॉरिशस, सूरीनाम, हालैण्ड एवं दक्षिण अफ्रिका में तथा दो भारत वर्ष में हो चुके हैं। आगामी महासम्मेलन सिंगापुर में 1-2 नवम्बर को तथा थाईलैण्ड (बैंकॉक) में 8-9 नवम्बर को होना निश्चित हुआ है। इस हेतु सभा की ओर से उक्त दोनों देशों में जाकर कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। कार्यक्रम में भाग लेने हेतु इच्छुक व्यक्ति अभी से अपना नामांकन - **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कैम्प कार्यालय 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** अथवा **'श्री आर्य सुरेचन्द्र अग्रवाल, उप प्रधान, सार्वदेशिक सभा, 12, क्रिसेन्ट, थलतेज हाईवे, अहमदाबाद'** पर अथवा मेरे पते पर प्रेषित करें ताकि आगे की व्यवस्था में सुविधा हो।

– **प्रकाश आर्य**, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, इन्दौर रोड, महू (म.प्र.)

आर्यसमाज बाजार सीताराम का
94वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली-6 का 94वां वार्षिकोत्सव समारोह 14 से 20 अप्रैल, 2014 मनाया गया। इस अवसर पर वृहद सामवेदीय यज्ञ आचार्य खुशीराम शर्मा के ब्रह्मत्व में हुआ। भजन पं. कुलदीप आर्य (बिजनौर) के हुए। महिला सम्मेलन 19 अप्रैल को श्रीमती शकुन्तला आर्या जी की अध्यक्षता में तथा अन्तिम दिन आर्यसम्मेलन श्री बनारसी सिंह जी वरिष्ठ पत्रकार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि दिली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी थे।

– बाबूराम आर्य, मन्त्री

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, सिरोही (राजस्थान) का
वार्षिकोत्सव व दीक्षान्त समारोह

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, सिरोही राजस्थान को 16वां वार्षिकोत्सव एवं द्वितीय समावर्त्तन (दीक्षान्त) समारोह 13-14-15 जून को मनाया जाएगा। इस अवसर पर अनेक वैदिक विद्वान, संन्यासीगण समारोह में पधारेंगे। गुरुकुलीय ब्रह्मचारिणियों के बौद्धिक, भाषण, गीत, कविता आदि के साथ-साथ व्यायाम प्रदर्शन भी किया जाएगा। आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर देवबालाओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

– धारणा याज्ञिक, आचार्या

आर्यसमाज राजनगर-2, पालम कालोनी नई दिल्ली में
नव सम्वत्सर समारोह

आर्यसमाज राज नगर-2, महरौली रोड, पालम कालोनी, नई दिल्ली में नव वर्ष विक्रमी 2071 के उपलक्ष्य में 18 से 20 अप्रैल तक तीन दिन दिवसीय उत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर आचार्य भद्रकाम वर्णी जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। समापन के अवसर पर 'नारी उत्थान-वैदिक शिक्षा पद्धति', 'पंच महायज्ञ-संस्कारों का महत्त्व', कला कौशल, आर्यसमाज-देवी-देवता विषयों पर विभिन्न विद्वानों के प्रवचन तथा बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए।

–हंसराज आर्य, मन्त्री

बैशाखी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज जवाहर नगर, पलवल में बैशाखी पर्व के अवसर पर आचार्य देशराज शुक्ल के ब्रह्मत्व में सामवेद के मत्रों से पञ्च कड़ीय यज्ञ करके देश के वीर सपूतों को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। आचार्य देशराज शुक्ल ने बैशाखी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज ही के दिन 13/04/1699 को गुरू गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की और इसी दिन जलिया वाले बाग में जनरल डायर ने क्रूरता से अनेकों राष्ट्रभक्त शहीद हुए। उन्होंने बताया कि इसी दिन 13/04/1952 को पाकिस्तान से आने के पश्चात् आर्य समाज जवाहर नगर की स्थापना की गई थी। *– मन्त्री*

उपनिषदों का पठन-पाठन

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) में दिनांक 23 से 29 जून तक सप्त दिवसीय माण्डुक्य, तैत्तिरीय, छान्दोगय, बृहदारण्यक, श्वेताशवेतर उपनिषद् के पठन-पाठन का शिविर उपनिषद् के मर्मज्ञ डॉ. धर्मवीर आचार्य (अजमेर) के निर्देशन में हो रहा है। उपनिषद् के पढ़ने के इच्छुक जन सम्मिलित होकर लाभ प्राप्त करें। व्यवस्था पूर्ण निःशुल्क है।

– आचार्य सत्यसिन्धु आर्य, 9827513029

समर कैम्प का आयोजन

आर्यसमाज चांदलोढ़िया, अहमदाबाद एवं परिभ्रमण वर्ल्ड द्वारा बच्चों के समर कैम्प-2014 का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें 5 से 17 वर्ष तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। योग, कला, क्राफ्ट एवं पपैट्स (कठपुतली) के कार्यकलाप राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता श्री सूरज रमावत द्वारा कराए जाएंगे। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें –

श्री विपिन रमावत, प्रधान आर्यसमाज मो. 9328200520

शोक समाचार

श्री जय प्रकाश शास्त्री को पितृशोक

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के कार्यालयाध्यक्ष एवं आर्यसमाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा के धर्माचार्य श्री जय प्रकाश शास्त्री जी के पूज्य पिता श्री रामजीलाल आर्य जी का 24 अप्रैल, 2014 को प्रातःकाल 6 बजे 68 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन उनके पैतृक गांव हिम्मतपुर काकामई एटा में पूर्ण वैदिक रीतिनुसार किया गया। श्रद्धांजलि सभा 4 मई को उनके पैतृक गांव में ही सम्पन्न हुई।

श्री सत्यप्रकाश आर्य को मातृशोक

आर्यसमाज जनकपुरी पंखा रोड सी ब्लॉक, नई दिल्ली-58 के उप प्रधान श्री सत्यप्रकाश आर्य जी एडवोकेट की पूज्या माताजी श्रीमती रामदेवी जी का दिनांक 5 मई, 2014 को अकस्मात् 88 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन पंजाबी बाग स्थित श्मशानघाट पर किया गया। इस अवसर पर सभा अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती रामदेवी जी कर्त्तव्य पारायण, धार्मिक महिला थीं। वह अतिथि सत्कार में अग्रणी रहती थीं। यही संस्कार उन्होंने अपने बच्चों को भी प्रदान किए। इनके पति श्री सत्यपाल आर्य जी एक चलती-फिरती आर्यसमाज थे। श्री सत्यपाल जी ने वैदिक विचारधारा के प्रचार के लिए बहुत कार्य किया। इन्होंने इन विचारों को प्रचारित करने के लिए प्रिंटिंग प्रैस की भी स्थापना की जिसमें अधिकतर वैदिक विचारधारा की पुस्तकें ही प्रकाशित की जाती थीं। इन्होंने मुस्लिम बहुल मेवात क्षेत्र में आर्यसमाज का बहुत प्रचार किया, जिसमें श्रीमती रामदेवी जी ने अपने पति के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया।

आचार्य ऋषिदेव जी के दादाजी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग के सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता वैदिक विद्वान आचार्य ऋषि देव जी के पूज्य दादाजी श्री मयाराम पवार जी का 90 वर्ष की अवस्था में दिनांक 27 अप्रैल, 14 को प्रातःकाल निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन पूर्ण वैदिक रीति से छिन्दवाड़ा (म.प्र.) में किया गया। वे अपने पीछे 5 पुत्रों एवं 2 पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

आचार्य ऋषिदेव जी उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री मारुतीराव पवार के सुपुत्र हैं। उन्हें आर्ष गुरुकुल में भेजने में अत्याधिक योगदान इन्हीं का रहा। वे अनेक ब्रह्मचारियों को छात्रवृति भी देते थे।

श्री शिवराज आर्य को भ्रातृशोक

आर्यसमाज पीपाड़ नगर के कोषाध्यक्ष श्री शिवराज आर्य के ज्येष्ठ भ्राता श्री किशनचन्द आर्य जी का 83 वर्ष की अवस्था में 8 मार्च को जोधपुर में निधन हो गया। इनका पूरा परिवार वैदिक विचारधारा से प्रभावित है। इनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आर्यसमाज पीपाड के प्रधान श्री शंकरलाल परिहार एवं मन्त्री श्री चम्पालाल आर्य द्वारा सम्पन्न कराया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

प्रवेश सूचना

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन मथुरा, उत्तर प्रदेश

महर्षि दयानन्द की दीक्षास्थली एवं योगिराज श्री कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में कक्षा 6 एवं 7 के लिए प्रवेश आरम्भ हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही प्रवेश दिया जाएगा। जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम 4 अध्याय कंठस्थ होगी वह प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है। अधिक जानकारी अथवा अपने बच्चों को गुरुकुल में प्रवेश दिलाने हेतु सम्पर्क करें

आचार्य स्वदेश
कुलपति (9456811519)

आचार्य हरिप्रकाश
प्राचार्य (9457333425)

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.)

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) में कक्षा छठी, सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश आरम्भ हो चुके हैं। इच्छुक जन दिनांक 15 जून से 15 जुलाई, 2014 के मध्य में आने वाले प्रत्येक रविवार को मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करा सकते है। अधिक जानकारी के लिए मो. नं. 09424471288, 09907056726 पर सम्पर्क करें – **प्रधानाचार्य**

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर,आर. ब्लाक, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-60 में कक्षा तृतीय से षष्ठ कक्षा तक प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। अधिक जानकारी के लिए फोन नं. 011-28741518 पर सम्पर्क करें – **प्रबन्धिका**

गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल मुजफ्फर नगर (उ.प्र)

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, जिला मुजफ्फर नगर (उ.प्र.) में नवीन सत्र 2014-15 के लिए प्रवेश प्रारम्भ हैं। प्रवेश हेतु कक्षा 5 पास होना अनिवार्य है।अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए गुरुकुल में प्रवेश हेतु अभिभावक यथाशीघ्र सम्पर्क करें। लिखित परीक्षा 19 मई, 2014 होगी। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

– प्रेमशंकर मिश्र, प्रधानाचार्य, 9411481624, 9997047680

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 5 मई, 2014 से रविवार 11 मई, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 8/9 मई, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 7 मई, 2014

प्रतिष्ठा में,

"वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"
महर्षि दयानन्द जी के इस वचन को पूरा करने के लिए और परमात्मा की पावन वाणी को हर घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से चारों वेदों की ओडियो डी.वी.डी. तैयार की गई है। यह कार्य विश्व के इतिहास में पहली बार हुआ है जबकि चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) को ऑडियो डी.वी.डी. में डेढ़ वर्ष के कठिन परिश्रम तथा उच्च कोटि के विद्वानों के निरीक्षण में अत्यन्त सावधानी पूर्वक तैयार की गई है। **362 घंटे** की इस डीवीडी पर 1000/- रुपये लागत आ रही है जबकि वेदों को हर घर तक पहुंचने के उद्देश्य से यह **डीवीडी मात्र 500/- रुपये** की सहयोग राशि में उपलब्ध कराई जा रही है। वेद का प्रचार-प्रसार करना ऋषियों ने परम पुरुषार्थ माना है। अतः इसी समय चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें–

वैदिक प्रकाशन विभाग,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001,
फोन – 011-23360150, 9540040339

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

प्राप्ति स्थान **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए

365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें

वैदिक विनय

20% छूट के साथ मात्र 125/- रुपये में

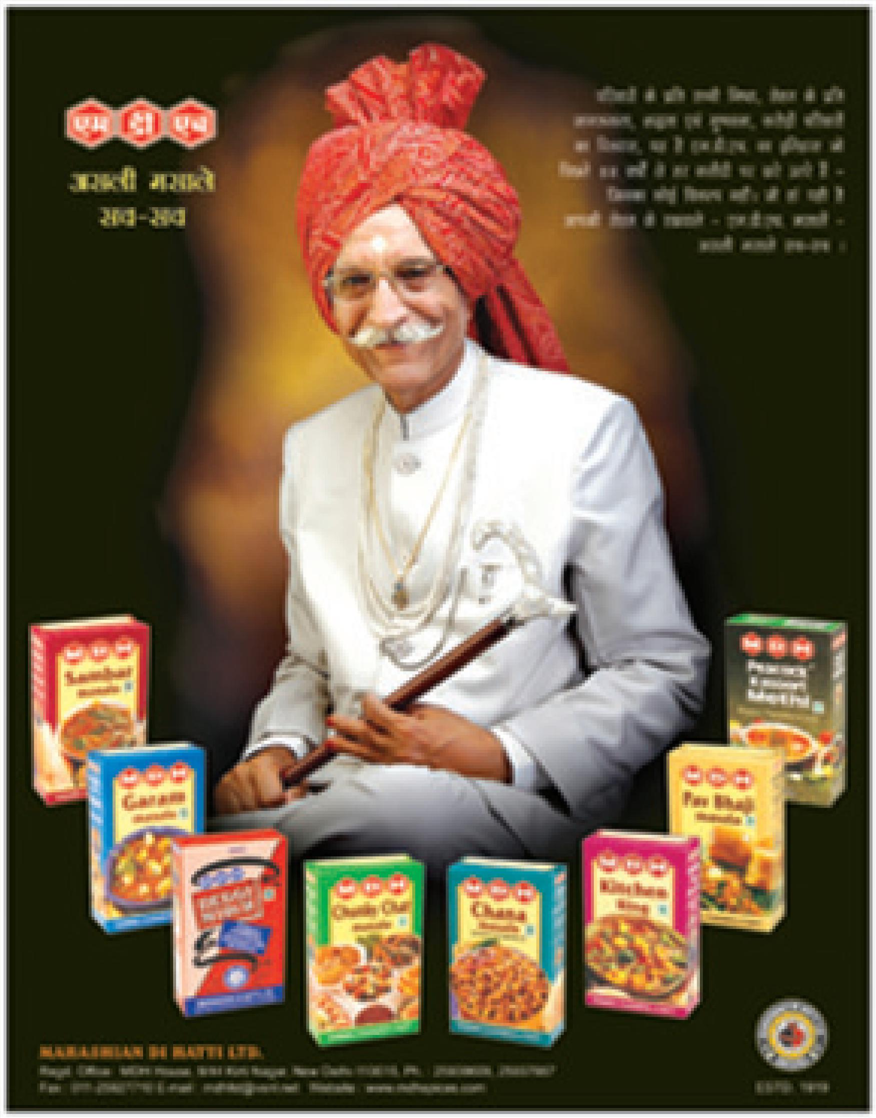

प्रथम पृष्ठ का शेष

गौरतलब है कि इस कार्यशाला में पण्डित गुरुदत्त जी की विचारधारा को युवाओं से परिचित करवाने के उद्देश्य से किया गया था इसलिए डॉ. विवेक आर्य द्वारा प्रोजेक्टर के माध्यम से उनके जीवन और विचारों को परदे से दिखाया गया था। अंत में पण्डित जी की लाला लाजपत राय एवं डॉ. रामप्रकाश जी द्वारा लिखित जीवनी, डॉ रामप्रकाश जी द्वारा सम्पादित पंडित जी की अंग्रेजी लेखावली, श्री त्रिलोक चंद जी द्वारा लिखित संक्षिप्त जीवनी जैसे साहित्य को बड़ी संख्या में युवाओं द्वारा क्रय किया गया। स्वाध्याय एवं साहित्य के प्रचार से ही सिद्धान्त का प्रचार होता है। इस दृष्टिकोण से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया था। भविष्य में भी इस प्रकार की कार्य शालाओं का आयोजन करने का विचार रखा गया है।

-विवेक अग्रवाल
आर्यसमाज रोहिणी सै.7, दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रेस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह